शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 अगस्त 2022
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

युद्ध के बारे में गांधीजी का मानसिक इतिहास

विनोबा

युद्ध के बारे में गांधीजी का मानसिक इतिहास देखिए। सन् 1907 में जुलू वार के समय उन्होंने घायल सैनिकों की सेवा का काम किया। उस युद्ध में उन्होंने सेवा करके भाग लिया। सेवा कार्य करुणा-कार्य है, लेकिन यह करने वाले भी लड़ाई में सहयोग ही देते हैं।

बाद में भारत आये, तब प्रथम विश्वयुद्ध के समय उन्होंने सैनिक भरती का काम शुरू किया। उन्होंने कहा कि हमारे लोग इतने निर्वीर्य बन गये हैं कि हममें तलवार चलाने की न तो हिम्मत है, न ताकत। अतः लोग एकबार सेना में भरती हो जायें तो हिम्मत आती है और हमारी आवाज बुलंद होती है। उस समय उन्होंने भरती के लिए कितनी-कितनी कोशिश की, यह सब मैंने अपनी आंखों से देखा है। घूम-घूमकर अंत में वे बीमार पड़ गये पर गुजरात में से रंगरूट नहीं मिले। आखिर इतने चिढ़ गये कि कह दिया - 'यहां वैष्णवधर्म और जैनधर्म दोनों ने मिलकर गुजरात को बर्बाद कर दिया! एक ने भक्ति सिखायी तो दूसरे ने अहिंसा। यह भक्ति और यह अहिंसा बिल्कुल निकम्मी है।' यह सन् 1918 की बात है।

फिर सन् 1940 में दूसरे विश्वयुद्ध के समय बापू ने यह भूमिका ली कि सरकार यदि स्वराज्य दे, तो इस लड़ाई में उसे हम नैतिक समर्थन देंगे, सेना और धन आदि कुछ नहीं देंगे।

बाद में स्वराज्य आया। सन् 1947 में कश्मीर समस्या आयी। पंडित नेहरू ने बापू से सलाह पूछी। बापू ने कहा - "तुम्हारे लिए इस समय सेना भेजना अनिवार्य है।"

इस तरह सन् 1907 से लेकर सन् 1947 तक का यानी 40 वर्ष का बापू का मानसिक इतिहास है। उसके बाद तो आज हम इतने वर्ष और आगे बढ़ गये हैं। अब इस समय बापू होते तो क्या करते, इसका निर्णय देना और इस प्रकार सोचना ठीक नहीं। ऐसा करने से हम उन पर और अपने पर भी अन्याय करते हैं। इसलिए बापू को उन्हीं के स्थान पर रखकर हमें विचार करना चाहिए।

फौजी मनोवृत्ति खत्म करो

आज यह खतरा बढ़ रहा है कि देश धीरे-धीरे फौजी तालीम की दिशा में जा रहा है। कहा जाता है कि उससे देश में अनुशासन आयेगा। कहा जाता है कि पड़ोसी देशों के वातावरण को देखकर हमें भी तैयार रहना चाहिए। यह विचार यदि जोर पकड़ेगा तो शिक्षा को भारी नुकसान पहुंचेगा। अनुशासन के नाम पर यदि पंखियों को मारना सिखाया जायेगा, तो हिंसा की शक्ति तो आयेगी नहीं, परंतु उसकी वृत्ति जरूर आयेगी। यह चीज खतरनाक है। उसमें हम अहिंसा की शक्ति, जो कि भारत की अपनी खास शक्ति है, वह खोयेंगे और हिंसा की शक्ति भी प्राप्त नहीं कर सकेंगे। फौजी तालीम के बारे में सावधान हो जाना चाहिए। इन दिनों जगह-जगह राइफल क्लब खोले जाते हैं। हमें सावधान रहना चाहिए कि हिंसा-शक्ति-रहित हिंसा-वृत्ति पनपेगी तो हम अत्यंत क्षीण हो जायेंगे। सिर्फ नयी तालीम नहीं, समग्र तालीम के लिए इसमें बड़ा खतरा है। इसके सामने अन्य सारे सवाल गौण हैं। देश और दुनिया का उद्धार लश्करी मनोवृत्ति बढ़ाने से कतई नहीं होगा। - विनोबा साहित्य, खंड 17